आलेख

तुहिन देव
मकान नं 225 एम. आई. जी.
कबीर नगर फेस -4
रायपुर (छ.ग.)
मो. 9425560952

गोर्की के 150 वर्ष और 'मां' के 112 वर्ष पर विशेष

यह वर्ष सोवियत साहित्य के पितामह महान लेखक मैक्सिम गोर्की के जन्म की सार्ध शताब्दी (150 वर्ष) का वर्ष है। यह वर्ष उनके द्वारा लिखित कालजयी मां उपन्यास के 112 वर्ष पूरे होने के कारण भी उल्लेखनीय है। विश्वविख्यात रूसी लेखक मैक्सिम गोर्की को संसार के अन्य देशों की भांति भारत में भी पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त है। उनके मां उपन्यास को तो लगभग सभी शिक्षित लोगों ने पढ़ा होगा। समालोचक मुमताज हुसैन ने गोर्की- जीवन और साहित्य, नामक एक लेख में ठीक ही कहा है कि वे अपने देश से बाहर दुनिया के किन लेखकों को जानते हैं, तो शेक्सपीयर के बाद उनकी अधिकांश संख्या गोर्की ही का नाम लेगी। प्रसिद्ध लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास ने बड़े दिलचस्प तरीके से गोर्की की लोकप्रियता और पाठकों पर उनके प्रभाव को व्यक्त किया। 1968 में सोवेत्स्काया कुल्तूरा (सोवियत संस्कृति) पत्र में छपे लेख में उन्होंने लिखा था दुनिया के किन किन तीन लेखकों ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है। ऐसा प्रश्न पूछने पर आपको शायद यह उत्तर मिलेगा-

मैक्सिम गोर्की, थामस मन और बर्नार्ड शॉ।

अथवा यह -

लेव तोलस्तोय, हेर्बर्ट वेल्स और मैक्सिम गोर्की अथवा वह -

चार्ल्स डिकेन्स, एर्नस्ट हेमिंग्वे और मैक्सिम गोर्की।

अथवा वह- गोल्सवर्दी, फ्रान्स काफ्का और मैक्सिम गोर्की।

हर बार तीन में से एक नाम अवश्य ही मैक्सिम गोर्की का होगा। स्वयं प्रेमचंद ने गोर्की के निधन पर अपनी पत्नी से उनकी चर्चा करते हुए यह कहा था- जब घर -घर शिक्षा का प्रचार हो जाएगा, तो क्या गोर्की का प्रभाव घर -घर न हो जायेगा। वे भी तुलसी-सूर की तरह चारों ओर पूजे जायेंगे।

मां महज एक उपन्यास नहीं है बल्कि यह सोवियत साहित्य की बुनियाद का पहला पत्थर था। यह पूरी दुनिया की समूची मेहनतकश और मुक्तिकामी जनता के लिए लिखा गया एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसने मेरे जैसे असंख्य लोगों की चेतना को झकझोरा था और जिन्हें इस उपन्यास को पढ़ने के बाद प्रगतिशील एवं वामपंथी आंदोलन से जुड़ने की प्रेरणा मिली।

“
मां महज एक उपन्यास नहीं है बल्कि यह सोवियत साहित्य की बुनियाद का पहला पत्थर था। यह पूरी दुनिया की समूची मेहनतकश और मुक्तिकामी जनता के लिए लिखा गया एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसने मेरे जैसे असंख्य लोगों की चेतना को झकझोरा था और जिन्हें इस उपन्यास को पढ़ने के बाद प्रगतिशील एवं वामपंथी आंदोलन से जुड़ने की प्रेरणा मिली।